श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ५

२०२५ अक्टुबर

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. कषाय तो नहीं पर कषाय के सहचर जो कषाय करने में प्रेरित करते है, उत्प्रेरित करके अंत में कषायरुप परिणमते है..... कहलाते है ।
२. हरिवर्ष क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र को अलग करने वाला..... पर्वत है ।
३. दुनिया में..... समुद्र से बडा कोई समुद्र नहीं है ।
४. ..... कषाय के उदय में मरे तो मनुष्य गति मे जाये ।
५. पुरुष और स्त्री दोनो के साथ काम भोग की अभिलाषा कराये वह नपुसंक वेद जो ..... के समान है ।
६. हाथी के दांत जैसे होने से ये पर्वत ..... कहलाते है ।
७. उम्र में सबसे बडे होने के कारण अन्य सारे ही गणधर अपना शिष्य परिवार..... सौंपते गये ।
८. बांस के कडक मूल जैसी ..... है ।
९. हे जगत के शरणरुप ! तुम्हें मैं नमस्कार करता हूं, आप मेरे..... बनो ।
१०. अविधि से करने की बजाय न करना अच्छा ऐसा बोलने से..... का दोष लगता है ।
११. पांडुकवन मे..... सुवर्ण की चार महाशीलाएं चार दिशाओ में है ।
१२. मूलनायक की प्रतिमा तो विशेषतः ..... वाली ही होती है ।
१३. जिस कर्म के उदय से जीव को दुःख में ..... की अनुभुति होती है वह अरति नो कषाय चा. मोहनीय कर्म है ।
१४. जिनराज की पूजा यह श्रावक का..... है ।
१५. भारत भूमि के मगधदेश के समीप में ..... गांव विद्या का धाम माना जाता था ।
१६. ..... पानी में की गई रेखा के समान है ।
१७. चित्र, विचित्र पर्वत का आकार..... जैसा है ।
१८. देवाधिदेव की धूपपूजा करने से धूप के जैसी आत्मा की ..... होती है ।
१९. हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत वैतादय का नाम..... है ।
२०. प्रभु के पास से त्रिपदी पाकर..... की रचना की ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. वक्षस्कार पर्वत किस क्षेत्र में है ?
२. दिशाओ का प्रमाण कर फिर विस्मृत कर दे वह कौनसा अतिचार ?
३. हरे वैडुर्यरत्न से बने पर्वत का नाम क्या है ?
४. श्री सुधर्मास्वामी के पिता का नाम क्या था ?
५. पुण्यानुबंधी पुण्य का अद्‌भूत साधन क्या है ?
६. मुझे समाधि दो ऐसी प्रार्थना किसके पास की गई है ?
७. लोभ आदमी को कैसा बनाता है ?
८. अनाहारी पद दिलाने वाली पूजा कौनसी ?
९. संसार किसके जैसा है ?
१०. प्रत्याखानी कषाय कौनसे चारित्र को पाने न दे ?
११. श्रवण नक्षत्र में किसका जन्म हुआ ?
१२. शठता, ठगाई, छल, प्रपंच, कपट वगैरह को क्या कहा जाता है ?
१३. मिश्र मोहनीय वाले जीवो की तुलना किस द्वीप के मनुष्यो से की गई है ?
१४. जिनराज की आशातना कैसी है ?
१५. भेड के सींग जैसा क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) निअगोअं २) अहक्खाय ३) पइस ४) सत्ते ५) धन्ना ६) भाविअ ७) चरित्त ८) हट्ठ ९) अईरेअ १०) कद्दम ११) नवसरय १२) हलिद्द १३) सेउ १४) अमरा १५) पढमं १६) आणण १७) कष १८) रेणु १९) विहि २०) धाय

प्रश्न नं. ४ जोड़ियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) रेखा समान	१) पू. गुणसागरसूरि म.	६) कल्पसूत्र	६) लोभ
२) जुगुप्सा	२) जन्म बदलता है गति नहीं	७) प्रत्याखानी	७) क्रोध
३) रक्मि	३) देवकुरु	८) श्री शांतिजिन	८) श्वेतरूप्यमय
४) विद्युतप्रभ	४) शक्ति, कीर्ति, मुक्ति	९) असंतोषी	९) नोकषाय
५) नीच गोत्र	५) चार माह	१०) सुधर्मा	१०) अयोग्य फल,फूल,नैवेद्य

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. सुधर्मा स्वामी का दीक्षा पर्याय कितने वर्ष का है ?
२. चारित्र मोहनीय के कुल भेद कितने हैं ?
३. श्रावक का छठवाँ व्रत कितने प्रकार से है ?
४. पूर्व उत्तर महाविदेह में कितने वक्षस्कार पर्वत हैं ?
५. व्यक्त गणधर ने दीक्षा ली तब उनकी उम्र कितने साल की थी ?
६. "अजित, शांति स्तव" की कितनी गाथाओं के अर्थ पूर्ण हुए ?
७. तीर्थंकर जन्माभिषेक की शीला की चौडाई कितने योजन है ?
८. अेक रति सिद्धभस्म से कितने तोले ताम्र का सोना बनता है ?
९. उत्तरकुरु में कितने कंचनगिरी पर्वत हैं ?
१०. अप्रत्याख्यानी मान उत्कृष्ट से कितने दिन रहता है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. दक्षिण दिशा में ५० मील की मर्यादा रखी हो और ४० मील जायें तो क्षेत्रवृद्धि अतिचार लगता है ।
२. प्रभु, संसार के भय को दूर करने वाले हैं ।
३. संज्वलन माया बांस के छिलके समान है ।
४. सुधर्मास्वामी की शिष्य परंपरा अंतिम दुप्पसहसूरि तक चलेगी ।
५. अनंतानुबंधी लोभ वाले का लोभ महाकष्ट से जाता है ।
६. जलपूजा करने से आत्मा कर्ममल को दूर कर निर्मलता प्राप्त करती है ।
७. मेरु पर्वत और तलहटी में कुल चार वन हैं ।
८. स्त्री वेद तृण की अग्नि समान है जो शीघ्र शांत हो जाता है ।
९. सत्व और बल में नहीं जीते गये ऐसे अजित नाथ भगवान हैं ।
१०. निषध पर्वत लालरंग का और ५०० योजन उंचा है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जिस कर्म के उदय से जीव को डर लगे वह भय नोकषाय चा. मोहनीय कर्म है ।
२. शाली में से शाली की उत्पन्न होती है इसी तरह मानव मर कर मानव ही होता है ।
३. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहादि सदाचार से युक्त चारित्र है ।
४. रुप के गुणों से देवता का पति इन्द्र भी उन्हे पा सकता नहीं ।
५. परमात्मा की द्रव्यपूजा करते हुए परमात्मा के प्रति उत्कृष्ट बहुमान रखना चाहिये ।
६. वर्ष याने क्षेत्र और धर याने धारण करनेवाला ।
७. सोलह कलाओं से खिलते चन्द्र की तरह बालक बडा हुआ ।
८. लोभ आत्मा को रंजित करता है, रंगता है, इसलिये लोभ के लिये दृष्टांत रंग के द्वारा समझाये है ।
९. पूजाविधि सच्ची परंतु परमात्मा के प्रति सम्यग् बहुमान न हो ।
१०. जिसका घर कभी भी बदल जाता है उसका पता लेने से क्या फायदा ?

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. दिशाव्रत की आवश्यकता और रहस्य समझाओ । २) कर्म विज्ञान की अठारहवीं गाथा का विशेषार्थ समझाओ ।
३. जंबुद्वीप के विविध पर्वतों की संख्या बताकर वृत वैताढय समझाओ । ४) व्यक्त और सुदर्मा स्वामी का साम्य तथा फर्क बताओ ।
५. जिनपूजा की पवित्रता समझाओ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगाव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com